भावयामि गोपालम्

रागम्: यमुनाकल्याणि ताळम्: खण्ड झम्प

(श्री अन्नमाचार्य विरचित)

पल्लवि

भावयामि गोपालबालं मनः सेवितम्
तत्पदं चिन्तयेयं सदा

चरणम्

कटि घटित मेखला खचित मणि घण्टिका

पटल निनदेन विभ्राजमानम्

कुटिल पद घटित संकुल शिञ्जिते नतम्
चटुल नटना समुज्ज्वल विलासम् ॥ १ ॥

निरत कर कलित नवनीतं ब्रह्मादि

सुर निकर भावना शोभित पदम्

तिरुवेङ्कटाचल स्थितं अनुपमं हरिम्
परम पुरुषं गोपालबालम् ॥ २ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇